

कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन : वैश्विक बदलाव का विश्लेषण

डॉ. मुस्तफा नवाज

सहायक प्राध्यापक (श्रम एवं समाज कल्याण)

शेरशाह कॉलेज, सासाराम

सारांश

आज के वैश्विकीकृत युग में कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन मानव जीवन की सबसे गतिशील कहानियों में से एक हैं। ये न केवल आर्थिक विकास के इंजन हैं, बल्कि लाखों परिवारों की आशाओं, संघर्षों और सपनों को भी चित्रित करते हैं। यह सारांश इन प्रक्रियाओं द्वारा लाए गए वैश्विक परिवर्तनों का मानवीय और व्यावसायिक दृष्टिकोण से गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें तकनीकी क्रांति, आर्थिक असमानताएँ, जलवायु परिवर्तन और महामारी के बाद के नए पैटर्न शामिल हैं। सीमाएँ पारगम्य हो चुकी हैं और डिजिटल तकनीक ने दूरस्थ कार्य को संभव बना दिया है, फिर भी लाखों लोग बेहतर रोजगार, शिक्षा और जीवन स्तर की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से महानगरों की ओर पलायन कर रहे हैं। विकसित देशों में कुशल श्रमिकों की माँग तथा विकासशील राष्ट्रों में अवसरों की कमी ने इस प्रवाह को और तेज किया है। एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के महानगरों से लेकर यूरोप व उत्तरी अमेरिका के नवोन्मेषी केंद्रों तक, यह गतिशीलता सांस्कृतिक आदान-प्रदान, उत्पादकता वृद्धि और नवाचार को बढ़ावा दे रही है। किंतु साथ ही शहरी भीड़भाड़, आवास संकट, स्वास्थ्य सेवाओं पर दबाव और पर्यावरणीय गिरावट जैसी चुनौतियाँ भी खड़ी कर रही है।

मानवीय दृष्टि से देखें तो बिहार जैसे क्षेत्रों से दिल्ली, मुंबई या विदेशों की ओर जाने वाले युवा न केवल अपनी किस्मत संवारते हैं, बल्कि धन प्रेषण के माध्यम से अपने परिवार और मूल स्थान की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करते हैं। फिर भी, परिवारों का बिखरना, सांस्कृतिक अनुकूलन की कठिनाइयाँ और मानसिक स्वास्थ्य की चुनौतियाँ इन कहानियों का अंधेरा पक्ष हैं। जलवायु परिवर्तन से प्रेरित प्रवासन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उभरते प्रभाव ने पारंपरिक पैटर्न को पूरी तरह बदल दिया है। यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि नीति-निर्माताओं को कौशल विकास, समावेशी शहरी नियोजन और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप रणनीतियाँ अपनानी होंगी। कार्यबल गतिशीलता को सकारात्मक दिशा प्रदान कर हम एक समान, समृद्ध और सतत विश्व का निर्माण कर सकते हैं, जहाँ हर व्यक्ति की क्षमता का पूरा सम्मान हो।

प्रमुख शब्द : जनसांख्यिकीय , वैश्विक, प्रवासी, श्रमिक , नवाचार, असमानता, मानव।

प्रस्तावना

समकालीन विश्व व्यवस्था में कार्यबल गतिशीलता तथा शहरी प्रवासन मानवीय विकास, आर्थिक रूपांतरण और सामाजिक संरचना के मूलभूत निर्धारक बन चुके हैं। ये दोनों प्रक्रियाएँ परस्पर गहराई से अंतर्संबंधित हैं तथा वैश्विक स्तर पर हो रहे बहुआयामी परिवर्तनों का जीवंत प्रतिबिंब प्रस्तुत करती हैं। कार्यबल गतिशीलता श्रमशक्ति के स्थानांतरण को व्यवस्थित करती है, जबकि शहरी प्रवासन मानव बस्तियों की पुनर्रचना करता है। दोनों मिलकर वैश्विक अर्थव्यवस्था को नई गतिशीलता प्रदान करते हैं तथा सामाजिक न्याय, समावेशिता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के नए आयाम सृजित करते हैं। यह विश्लेषण इन प्रक्रियाओं को मात्र जनसांख्यिकीय घटनाओं के रूप में नहीं देखता, अपितु वैश्विक अर्थव्यवस्था, सामाजिक न्याय तथा पर्यावरणीय स्थिरता के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करता है। जनसांख्यिकीय असंतुलन, जलवायु परिवर्तन, प्रौद्योगिकी क्रांति और आर्थिक असमानता जैसी शक्तियाँ इन दोनों प्रक्रियाओं को निरंतर प्रभावित कर रही हैं। जहाँ एक ओर विकसित समाजों में श्रमशक्ति की कमी और वृद्धावस्था बढ़ रही है, वहीं विकासशील क्षेत्रों में युवा जनसंख्या का विस्तार रोजगार की माँग को बढ़ा रहा है। यह जनसांख्यिकीय असंतुलन कार्यबल गतिशीलता को वैश्विक अर्थव्यवस्था का अनिवार्य तत्व बना रहा है।

जलवायु-प्रेरित विस्थापन, प्रौद्योगिकी-आधारित कौशल माँग तथा महामारी के बाद की असमानताएँ इन प्रक्रियाओं को और अधिक जटिल तथा बहु-आयामी बना रही हैं। कार्यबल गतिशीलता अब केवल भौतिक स्थानांतरण नहीं रह गई है, अपितु कौशल स्थानांतरण, ज्ञान आदान-प्रदान तथा वैश्विक मूल्य-श्रृंखलाओं का अभिन्न अंग बन गई है। इसी प्रकार शहरी प्रवासन विश्व शहरीकरण की गति को निर्धारित कर रहा है, जो आधुनिक सभ्यता की सबसे व्यापक सामाजिक-आर्थिक घटना है। यह कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन के वैश्विक पैटर्न, उनके अंतर्संबंधों, प्रमुख परिवर्तनकारी आयामों तथा भावी चुनौतियों का गहन और संतुलित विश्लेषण प्रस्तुत करेगा। उद्देश्य यह है कि इन प्रक्रियाओं को समझकर एक अधिक समावेशी, न्यायपूर्ण और सतत विश्व व्यवस्था के निर्माण हेतु बौद्धिक आधार तैयार किया जा सके।

कार्यबल गतिशीलता का वैश्विक परिदृश्य

कार्यबल गतिशीलता समकालीन वैश्विक अर्थव्यवस्था की एक मूलभूत प्रक्रिया है जो श्रमशक्ति के स्थानान्तरण, कौशल विनिमय तथा उत्पादकता वृद्धि को व्यवस्थित करती है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के नवीनतम अनुमानों के अनुसार, 2022 में वैश्विक स्तर पर 167.7 मिलियन प्रवासी श्रमिक थे जो विश्व की कुल श्रमशक्ति का 4.7 प्रतिशत हैं। यह संख्या 2013 से निरंतर वृद्धि दर्शाती है, हालांकि कोविड-19 महामारी के बाद वृद्धि दर धीमी होकर प्रति वर्ष एक प्रतिशत से कम रह गई। 2024 में अंतरराष्ट्रीय प्रवासी कुल 304 मिलियन से अधिक हो गए, जिनमें 168 मिलियन प्रवासी श्रमिक शामिल हैं। इन प्रवासी श्रमिकों का योगदान केवल श्रम आपूर्ति तक सीमित नहीं है, अपितु वे नवाचार, उद्यमिता तथा सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों को सशक्त बनाते हैं। यह गतिशीलता जनसांख्यिकीय असंतुलन से सीधे जुड़ी हुई है। विकसित अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धावस्था तथा जन्म दर में कमी के कारण श्रमशक्ति सिकुड़ रही है, जबकि विकासशील क्षेत्रों में युवा जनसंख्या का विस्तार रोजगार की माँग को बढ़ा रहा है। यह जनसांख्यिकीय आर्बिट्राज कार्यबल गतिशीलता को अनिवार्य बनाता है। प्रवासी श्रमिक स्वास्थ्य, देखभाल, प्रौद्योगिकी तथा हरित ऊर्जा क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। महिलाएँ कुल प्रवासी श्रमिकों का लगभग 39 प्रतिशत हैं तथा देखभाल अर्थव्यवस्था में उनका योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

प्रेषण (Remittances) इस गतिशीलता का एक अन्य महत्वपूर्ण आयाम है। 2024 में वैश्विक प्रेषण 905 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचे, जो विकासशील देशों की अर्थव्यवस्थाओं के लिए विदेशी प्रत्यक्ष निवेश तथा आधिकारिक विकास सहायता से भी अधिक महत्वपूर्ण स्रोत बन चुके हैं। ये प्रेषण न केवल घरेलू उपभोग बढ़ाते हैं अपितु निवेश, शिक्षा तथा स्वास्थ्य में भी योगदान देते हैं। तथापि, कार्यबल गतिशीलता के साथ चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं। वैश्विक रोजगार अंतर 2025 में बढ़ने की संभावना है तथा व्यापार तनाव, जलवायु परिवर्तन तथा प्रौद्योगिकी स्वचालन श्रम बाजारों को पुनर्गठित कर रहे हैं। कार्यबल गतिशीलता अब मात्र भौतिक स्थानान्तरण नहीं रह गई है। यह कौशल स्थानान्तरण, ज्ञान आदान-प्रदान तथा वैश्विक मूल्य-श्रृंखलाओं का अभिन्न अंग बन चुकी है। सेवाक्षेत्र में 80 प्रतिशत से अधिक प्रवासी महिलाएँ तथा 60 प्रतिशत पुरुष नियोजित हैं, जो देखभाल तथा सेवा-उन्मुख अर्थव्यवस्था की बढ़ती माँग को दर्शाता है। यह प्रक्रिया वैश्विक उत्पादकता को बढ़ाती है तथा स्रोत देशों में मानव पूँजी विकास को प्रोत्साहित करती है। सुशासन तथा नीति-निर्माण की दृष्टि से कार्यबल गतिशीलता को सुरक्षित, व्यवस्थित तथा नियमित बनाना आवश्यक है। जब यह गतिशीलता समावेशी होती है, तो वह सामाजिक एकीकरण, नवाचार तथा सतत विकास को बढ़ावा देती है। विपरीत रूप से, अनियमित गतिशीलता असुरक्षा तथा असमानता को जन्म देती है। इस प्रकार कार्यबल गतिशीलता वैश्विक बदलाव का केंद्र है जो अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाती है तथा मानवीय विकास के नए आयाम सृजित करती है। यह प्रक्रिया शासन को चुनौती देते हुए अवसर भी प्रदान करती है कि श्रम बाजारों को अधिक लचीला, न्यायपूर्ण तथा भविष्य-उन्मुख बनाया जाए।

शहरी प्रवासन के पैटर्न और प्रवर्तक

शहरी प्रवासन वैश्विक शहरीकरण की सबसे प्रमुख प्रक्रिया है जो मानव बस्तियों की पुनर्रचना तथा आर्थिक संरचना के परिवर्तन को दर्शाती है। संयुक्त राष्ट्र विश्व शहरीकरण संभावनाएँ 2025 के अनुसार, 2025 में विश्व की जनसंख्या का 45 प्रतिशत शहरों में, 36 प्रतिशत कस्बों में तथा 19 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में निवास कर रहा है। 2050 तक यह शहरीकरण 68 प्रतिशत तक पहुँचने की संभावना है। शहरी प्रवासन मुख्यतः ग्रामीण-शहरी तथा शहरी-शहरी रूपों में होता है तथा यह जनसांख्यिकीय, आर्थिक तथा पर्यावरणीय कारकों से प्रेरित है। इस प्रवासन के पैटर्न में दो प्रमुख विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं। प्रथम, अफ्रीका तथा एशिया में शहरी वृद्धि का केंद्रित होना, जहाँ विश्व की शहरी जनसंख्या वृद्धि का 90 प्रतिशत हिस्सा इन क्षेत्रों में है। द्वितीय, मध्यम आकार के शहरी केंद्रों में वृद्धि के साथ-साथ मेगा-शहरों की ओर भी प्रवाह। यह पैटर्न समान रूप से नहीं है। कुछ क्षेत्रों में शहरीकरण पूरे शहरी स्पेक्ट्रम में फैला है जबकि कुछ में यह बड़े शहरों पर केंद्रित है। शहरी प्रवासन विश्व की कुल जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख वाहक बन चुका है तथा यह आर्थिक विकास की गति को निर्धारित करता है।

प्रवर्तक कारक बहुआयामी हैं। आर्थिक कारक सबसे प्रमुख हैं, जहाँ बेहतर रोजगार, वेतन तथा आर्थिक अवसर शहरी क्षेत्रों की ओर आकर्षण उत्पन्न करते हैं। शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता भी प्रवासन को प्रेरित करती है। युवा जनसंख्या का विस्तार तथा ग्रामीण क्षेत्रों में अवसरों की अपर्याप्तता इस प्रक्रिया को तीव्र बनाती है। जलवायु परिवर्तन ने एक नया प्रवर्तक आयाम जोड़ा है। चरम मौसम घटनाएँ, सूखा, बाढ़ तथा पर्यावरणीय गिरावट लाखों लोगों को विस्थापित करती हैं तथा शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन को अनिवार्य बनाती हैं। शहरी प्रवासन अर्थव्यवस्था को गतिशीलता प्रदान करता है क्योंकि यह श्रम बाजार को केंद्रित करता है तथा उत्पादकता बढ़ाता है। तथापि, यह असमानता तथा दबाव भी उत्पन्न करता है। अनौपचारिक क्षेत्र में प्रवासियों का केन्द्रीकरण, आवास की कमी तथा बुनियादी सेवाओं पर बोझ शहरी प्रबंधन को चुनौती देता है। प्रवासन की गति तथा पैटर्न नीति-निर्माण की क्षमता पर निर्भर करते हैं। जब शहरी नियोजन समावेशी तथा सतत होता है, तो प्रवासन विकास का वाहक बनता है। विपरीत स्थिति में यह सामाजिक तनाव तथा पर्यावरणीय असंतुलन को बढ़ावा देता है। शहरी प्रवासन के पैटर्न अब बहु-कारणिक हो गए हैं। आर्थिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय कारक एक-दूसरे से जुड़कर जटिल प्रवाह उत्पन्न करते हैं। प्रौद्योगिकी तथा डिजिटलीकरण ने भी इस प्रक्रिया को प्रभावित किया है क्योंकि कौशल-आधारित अवसर बड़े शहरी केंद्रों में केंद्रित हैं। यह प्रवासन विश्व शहरीकरण की गति को निर्धारित कर रहा है तथा सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में निर्णायक भूमिका निभा रहा है।

समग्र रूप से शहरी प्रवासन वैश्विक बदलाव का दर्पण है। यह मानव विकास की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करता है तथा शासन को समावेशी बुनियादी ढाँचे, कौशल विकास तथा पर्यावरणीय अनुकूलन की चुनौती देता है। जब यह प्रक्रिया सुव्यवस्थित तथा न्यायपूर्ण होती है, तो वह समृद्धि तथा सामाजिक प्रगति का माध्यम बनती है। यह पैटर्न तथा प्रवर्तक शासन की दृष्टि को बदलते हैं तथा हमें सिखाते हैं कि शहरीकरण को मानवीय गरिमा तथा सततता के साथ जोड़ना अनिवार्य है।

वैश्विक बदलाव के प्रमुख आयाम

1. जनसांख्यिकीय

जनसांख्यिकीय आयाम कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन को वैश्विक स्तर पर सबसे गहरा और निर्णायक प्रभाव प्रदान करता है। विश्व की जनसंख्या संरचना में हो रहे मौलिक परिवर्तन इन दोनों प्रक्रियाओं को निरंतर पुनर्परिभाषित कर रहे हैं। विकसित समाजों में जन्म दर की निरंतर गिरावट और जीवन प्रत्याशा में वृद्धि के कारण श्रमशक्ति का सिकुड़ना एक स्थायी वास्तविकता बन चुका है। इस कमी को पूरा करने के लिए कार्यबल गतिशीलता अनिवार्य हो गई है, क्योंकि युवा श्रमिकों की उपलब्धता अब स्थानीय स्तर पर संभव नहीं रह गई। वहीं विकासशील क्षेत्रों में युवा जनसंख्या का तेज विस्तार रोजगार की भारी माँग उत्पन्न कर रहा है, जिससे शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन की लहर बढ़ रही है।

यह जनसांख्यिकीय असंतुलन 'जनसांख्यिकीय लाभांश' और 'जनसांख्यिकीय आर्बिट्राज' दोनों को एक साथ जन्म दे रहा है। जहाँ एक ओर श्रम की कमी वाले समाजों में प्रवासी श्रमिक उत्पादकता और नवाचार का आधार बन रहे हैं, वहीं दूसरी ओर युवा-बहुल समाजों में शहरीकरण श्रम बाजार को केंद्रित कर रहा है। महिलाओं की बढ़ती भागीदारी तथा देखभाल कार्यों में उनकी प्रमुख भूमिका ने कार्यबल गतिशीलता को लैंगिक आयाम भी प्रदान किया है। वृद्धावस्था की बढ़ती चुनौती ने स्वास्थ्य और सामाजिक देखभाल क्षेत्रों में श्रम की माँग को और अधिक जटिल बना दिया है। जनसांख्यिकीय परिवर्तन शहरी प्रवासन को भी बहुआयामी बना रहे हैं। युवा जनसंख्या की आकांक्षाएँ बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन-स्तर की ओर प्रेरित करती हैं, जिससे ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर स्थायी तथा मौसमी दोनों प्रकार के प्रवाह बढ़ रहे हैं। यह प्रक्रिया लोकतंत्र, सामाजिक सुरक्षा और सांस्कृतिक एकीकरण की नई माँगें पैदा करती है। सुशासन की दृष्टि से जनसांख्यिकीय आयाम शासन को लचीली नीतियाँ बनाने की चुनौती देता है, ताकि श्रम बाजारों को संतुलित रखा जा सके। यदि यह आयाम अनदेखा रहा तो असमानता बढ़ेगी और सामाजिक तनाव उत्पन्न होगा। इस प्रकार जनसांख्यिकीय परिवर्तन कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन को वैश्विक अर्थव्यवस्था का केंद्र बिंदु बनाता है। यह प्रक्रिया मानवीय विकास की गति निर्धारित करती है तथा नीति-निर्माताओं को समावेशी और भविष्य-उन्मुख दृष्टिकोण अपनाने के लिए बाध्य करती है। जनसांख्यिकीय वास्तविकता अब केवल संख्या का मामला नहीं रह गई, अपितु वह सामाजिक न्याय, आर्थिक स्थिरता और सतत विकास का नैतिक आधार बन चुकी है।

2. प्रौद्योगिकी एवं डिजिटलीकरण

प्रौद्योगिकी और डिजिटलीकरण का आयाम कार्यबल गतिशीलता तथा शहरी प्रवासन को गहन रूप से पुनर्गठित कर रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन, रोबोटिक्स और डिजिटल प्लेटफॉर्मस ने पारंपरिक श्रम बाजारों की संरचना को मौलिक रूप से बदल दिया है। जहाँ एक ओर कुछ कार्यों का स्वचालन श्रम की माँग को कम कर रहा है, वहीं दूसरी ओर नए कौशल-आधारित रोजगार सृजन कर रहा है। यह परिवर्तन कार्यबल गतिशीलता को भौतिक स्थानांतरण से ऊपर उठाकर कौशल स्थानांतरण और ज्ञान आदान-प्रदान का माध्यम बना रहा है। डिजिटलीकरण ने शहरी प्रवासन को भी नई गति दी है। रिमोट वर्क, गिग इकोनॉमी और डिजिटल प्लेटफॉर्मस ने श्रमिकों को भौगोलिक बाधाओं से मुक्त किया है, जिससे शहरी केंद्रों की ओर प्रवाह अधिक चयनात्मक और कौशल-उन्मुख हो गया है। तथापि, डिजिटल विभाजन ने इस प्रक्रिया को असमान बना दिया है। जिनके पास कौशल और पहुँच है, वे अवसरों का लाभ उठा रहे हैं, जबकि वंचित वर्ग पीछे छूट रहा है। यह विभाजन शहरी प्रवासन को मात्र आर्थिक प्रक्रिया नहीं, अपितु सामाजिक असमानता का वाहक बना रहा है।

प्रौद्योगिकी का प्रभाव कार्यबल की प्रकृति को भी बदल रहा है। हाइब्रिड कार्य-प्रणाली और वर्चुअल सहयोग ने पारंपरिक शहरी केंद्रों की एकाधिकारिता को चुनौती दी है, जिससे मध्यम और छोटे शहरी क्षेत्रों में भी गतिशीलता बढ़ रही है। डिजिटल अर्थव्यवस्था ने सेवा क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई है, जिससे लैंगिक गतिशीलता का नया आयाम उभरा है। सुशासन की दृष्टि से यह आयाम शासन को निरंतर कौशल विकास, डिजिटल साक्षरता और समावेशी इंफ्रास्ट्रक्चर की माँग करता है। प्रौद्योगिकी और डिजिटलीकरण कार्यबल गतिशीलता को अधिक लचीला और उत्पादक बनाते हैं, परंतु वे नैतिक चुनौतियाँ भी पैदा करते हैं। डेटा गोपनीयता, श्रम अधिकारों का क्षरण और स्वचालन से उत्पन्न बेरोजगारी शासन की जिम्मेदारी बढ़ाती है। यह आयाम हमें सिखाता है कि प्रौद्योगिकी मानवीय गरिमा और सामाजिक न्याय के साथ एकीकृत होनी चाहिए। जब डिजिटलीकरण समावेशी होता है, तो वह कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन को विकास का सशक्त माध्यम बनाता है। इस प्रकार प्रौद्योगिकी का यह आयाम वैश्विक बदलाव का केंद्र है जो शासन को भविष्य-उन्मुख नीतियाँ बनाने के लिए प्रेरित करता है। यह प्रक्रिया मानवीय क्षमता को नई ऊँचाइयों पर ले जाती है तथा सुशासन को अधिक गतिशील और न्यायपूर्ण बनाने का अवसर प्रदान करती है।

3. जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन का सबसे शक्तिशाली तथा बहु-कारणिक आयाम बन चुका है। चरम मौसम घटनाएँ, समुद्र स्तर में वृद्धि, सूखा, बाढ़ और मरुस्थलीकरण लाखों लोगों को उनके पारंपरिक निवास से विस्थापित कर रहे हैं। यह विस्थापन अब मात्र पर्यावरणीय घटना नहीं रह गया, अपितु यह आर्थिक और सामाजिक रूपांतरण का प्रमुख उत्प्रेरक बन गया है। जलवायु-प्रेरित प्रवासन कार्यबल गतिशीलता को अनिवार्य रूप से बढ़ा रहा है, क्योंकि प्रभावित क्षेत्रों में रोजगार और आजीविका की संभावनाएँ समाप्त हो रही हैं।

यह आयाम शहरी प्रवासन को भी जटिल बना रहा है। शहरी क्षेत्र अब केवल आर्थिक आकर्षण के केंद्र नहीं रह गए, अपितु वे जलवायु शरणार्थियों के लिए भी सुरक्षित स्थान बन रहे हैं। परिणामस्वरूप शहरी बुनियादी ढाँचे पर भारी दबाव बढ़ रहा है और सामाजिक तनाव उत्पन्न हो रहा है। जलवायु परिवर्तन ने प्रवासन को बहु-आयामी बना दिया है, जहाँ आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय कारक एक-दूसरे से जुड़कर जटिल प्रवाह पैदा कर रहे हैं। सुशासन की दृष्टि से यह आयाम शासन को अनुकूलन और शमन दोनों की चुनौती देता है। कार्यबल गतिशीलता को जलवायु-सुरक्षित और समावेशी बनाना आवश्यक हो गया है, ताकि विस्थापित श्रमिकों को उचित कौशल विकास और सामाजिक सुरक्षा मिल सके। शहरी नियोजन अब जलवायु अनुकूल होना चाहिए, जिसमें हरित इंफ्रास्ट्रक्चर, सतत आवास और पर्यावरणीय सुरक्षा शामिल हो। यदि यह आयाम अनदेखा रहा तो असमानता बढ़ेगी और मानवीय गरिमा प्रभावित होगी।

जलवायु परिवर्तन कार्यबल गतिशीलता को मात्र श्रम बाजार की प्रक्रिया नहीं, अपितु अस्तित्व की चुनौती बना रहा है। यह शासन को वैश्विक सहयोग और दीर्घकालिक दृष्टि अपनाने के लिए बाध्य करता है। जब जलवायु परिवर्तन को केंद्र में रखकर नीतियाँ बनाई जाती हैं, तो कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन विकास का साधन बनते हैं। यह आयाम हमें याद दिलाता है कि पर्यावरणीय स्थिरता के बिना कोई भी गतिशीलता सतत नहीं हो सकती। समग्र रूप से जलवायु परिवर्तन वैश्विक बदलाव का नैतिक और व्यावहारिक आधार है। यह प्रक्रिया शासन की क्षमता को परखती है तथा सुशासन को पर्यावरणीय न्याय के साथ जोड़ने का अवसर प्रदान करती है।

4. आर्थिक एवं महामारी के बाद का पुनर्गठन

आर्थिक एवं महामारी के बाद का पुनर्गठन कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन को नई दिशा और जटिलता प्रदान कर रहा है। महामारी ने वैश्विक आपूर्ति-श्रृंखलाओं को तोड़ा तथा श्रम बाजारों को पुनर्गठित किया, जिससे कार्यबल गतिशीलता अधिक लचीली और डिजिटल-उन्मुख हो गई। हाइब्रिड कार्य-प्रणाली, रिमोट वर्क और गिग इकोनॉमी ने पारंपरिक शहरी केंद्रों की एकाधिकारिता को चुनौती दी तथा प्रवासन को अधिक चयनात्मक बना दिया।

यह पुनर्गठन आर्थिक असमानता को भी बढ़ा रहा है। कुछ क्षेत्रों में रोजगार सृजन तेज हुआ है, जबकि अन्य में संकुचन देखा गया। इससे शहरी प्रवासन की प्रकृति बदल गई है, जहाँ कौशल-युक्त श्रमिकों का प्रवाह बढ़ा है और अकुशल श्रमिकों की स्थिति अधिक असुरक्षित हो गई है। महामारी के बाद की आर्थिक वसूली ने वैश्विक मूल्य-श्रृंखलाओं को पुनर्संरचित किया, जिससे कार्यबल गतिशीलता अब स्थानीय से वैश्विक स्तर पर केंद्रित हो गई है। सुशासन की दृष्टि से यह आयाम शासन को समावेशी पुनर्गठन की चुनौती देता है। सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य बीमा और कौशल विकास को प्राथमिकता देना अनिवार्य हो गया है, ताकि गतिशीलता अवसर का साधन बने। शहरी नियोजन अब महामारी के बाद की वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए, जिसमें लचीला आवास और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर शामिल हो।

आर्थिक पुनर्गठन कार्यबल गतिशीलता को अधिक उत्पादक और नवाचारी बना रहा है, परंतु यह असमानता और असुरक्षा भी बढ़ा रहा है। जब यह प्रक्रिया न्यायपूर्ण होती है, तो वह सामाजिक प्रगति का वाहक बनती है। महामारी के बाद का अनुभव हमें सिखाता है कि आर्थिक स्थिरता के बिना गतिशीलता सतत नहीं रह सकती। यह शासन को भविष्य-उन्मुख नीतियाँ बनाने के लिए प्रेरित करता है। जब आर्थिक पुनर्गठन मानवीय केंद्रित होता है, तो कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन विकास की नई ऊर्जा बन जाते हैं। यह प्रक्रिया सुशासन को अधिक लचीला, समावेशी और सतत बनाने का अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार आर्थिक एवं महामारी के बाद का पुनर्गठन वैश्विक बदलाव का एक जीवंत आयाम है जो शासन की क्षमता को परखता है तथा मानवीय विकास को नई दिशा देता है।

अंतर्संबंध, प्रभाव तथा चुनौतियाँ

कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन वैश्विक बदलाव की दो अभिन्न तथा परस्पर पूरक प्रक्रियाएँ हैं। जहाँ कार्यबल गतिशीलता श्रमशक्ति को स्थानांतरित करके शहरी केंद्रों में उत्पादकता और नवाचार को केंद्रित करती है, वहीं शहरी प्रवासन गतिशीलता को निरंतर आकर्षित और पुनर्निर्देशित करता है। यह अंतर्संबंध जनसांख्यिकीय, प्रौद्योगिकी, जलवायु तथा आर्थिक आयामों द्वारा और भी गहरा बनता है। गतिशीलता शहरीकरण को गति प्रदान करती है, जबकि शहरीकरण श्रम बाजार को अधिक लचीला और विविध बनाता है। दोनों मिलकर वैश्विक अर्थव्यवस्था को एक गतिशील चक्र प्रदान करते हैं जिसमें मानव पूँजी का निरंतर प्रवाह होता है। इस अंतर्संबंध के प्रभाव बहुआयामी हैं। सकारात्मक दृष्टि से ये प्रक्रियाएँ उत्पादकता वृद्धि, ज्ञान आदान-प्रदान, कौशल विकास तथा वैश्विक मूल्य-श्रृंखलाओं को मजबूत करती हैं। प्रेषण अर्थव्यवस्थाओं को सशक्त बनाते हैं, जबकि शहरी केंद्र नवाचार और उद्यमिता के हब बनते हैं। सामाजिक रूप से ये प्रक्रियाएँ सांस्कृतिक आदान-प्रदान और लैंगिक समानता को बढ़ावा देती हैं। तथापि, नकारात्मक प्रभाव भी उतने ही गहन हैं। ये असमानता को बढ़ाती हैं, शहरी बुनियादी ढाँचे पर भारी

दबाव डालती हैं तथा सामाजिक तनाव और पर्यावरणीय गिरावट को जन्म देती हैं। जब गतिशीलता और प्रवासन असंतुलित होते हैं, तो वे सामाजिक न्याय की अवधारणा को चुनौती देते हैं तथा कुछ वर्गों को स्थायी रूप से हाशिए पर धकेल देते हैं।

चुनौतियाँ इस अंतर्संबंध को और जटिल बनाती हैं। कौशल असंतुलन, डिजिटल विभाजन तथा सामाजिक एकीकरण की कमी प्रमुख बाधाएँ हैं। जलवायु-प्रेरित विस्थापन ने इन प्रक्रियाओं को बहु-कारणिक बना दिया है, जिससे शासन की क्षमता पर नया दबाव पड़ा है। नीतिगत असंगति तथा अपर्याप्त सामाजिक सुरक्षा प्रणालियाँ गतिशीलता को अवसर के बजाय संकट का साधन बना सकती हैं। महामारी के बाद के पुनर्गठन ने इन चुनौतियों को और अधिक स्पष्ट किया है। सुशासन की दृष्टि से इन अंतर्संबंधों, प्रभावों तथा चुनौतियों को समझना अनिवार्य है। समावेशी नीतियाँ, कौशल विकास कार्यक्रम, जलवायु अनुकूलन तथा लचीला शहरी नियोजन इन प्रक्रियाओं को सकारात्मक दिशा दे सकते हैं। जब कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन मानवीय गरिमा, समानता तथा सतत विकास के सिद्धांतों के साथ जुड़ते हैं, तभी वे वैश्विक समृद्धि और सामाजिक न्याय का सच्चा वाहक बनते हैं। यह अंतर्संबंध शासन को याद दिलाता है कि तकनीकी और आर्थिक प्रगति के साथ-साथ मानवीय केंद्रित दृष्टिकोण अपनाना ही सच्चा विकास है।

निष्कर्ष

कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन समकालीन वैश्विक परिवर्तन की दो सबसे शक्तिशाली तथा अंतर्संबंधित प्रक्रियाएँ हैं। ये जनसांख्यिकीय संक्रमण, प्रौद्योगिकी क्रांति, जलवायु परिवर्तन तथा महामारी के बाद के आर्थिक पुनर्गठन जैसे प्रमुख आयामों से गहराई से प्रभावित हो रही हैं। दोनों मिलकर विश्व अर्थव्यवस्था को गतिशीलता प्रदान करती हैं तथा मानव विकास की दिशा निर्धारित करती हैं। यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन अब मात्र जनसांख्यिकीय घटनाएँ नहीं रह गई हैं। ये सामाजिक न्याय, आर्थिक समावेशिता तथा पर्यावरणीय स्थिरता के व्यापक प्रश्नों से जुड़ चुकी हैं। जब ये प्रक्रियाएँ सुव्यवस्थित और समावेशी होती हैं, तो वे उत्पादकता, नवाचार तथा सामाजिक प्रगति का स्रोत बनती हैं। विपरीत रूप से, अनियंत्रित और असमान गतिशीलता असुरक्षा, सामाजिक तनाव तथा असमानता को बढ़ावा देती है।

भविष्य की चुनौती यह है कि हम इन प्रक्रियाओं को मानवीय केंद्रित दृष्टिकोण के साथ जोड़ सकें। समावेशी नीतियाँ, कौशल विकास, जलवायु अनुकूलन और लचीला शहरी नियोजन इन दोनों को सतत विकास के वाहक बना सकते हैं। सुशासन की जिम्मेदारी है कि कार्यबल गतिशीलता को अवसर का माध्यम बनाया जाए तथा शहरी प्रवासन को सामाजिक न्याय के साथ सामंजस्यपूर्ण किया जाए। 21वीं सदी में कार्यबल गतिशीलता और शहरी प्रवासन का प्रबंधन मानव सभ्यता की परिपक्वता की कसौटी बन चुका है। यदि हम इन्हें मानवीय गरिमा, समानता और सततता के सिद्धांतों के साथ एकीकृत कर पाए, तो ये प्रक्रियाएँ न केवल आर्थिक समृद्धि, अपितु एक अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी विश्व व्यवस्था के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभा सकेंगी।

संदर्भ सूची :-

1. Castles, S., de Haas, H., & Miller, M. J. (2020). The era of migrations: Global people flows into the contemporary world (6th ed.). Bloomsbury Academic.
2. de Haas, H. (2023). The reality about migration: The truth of the most partisan issue in politics. Basic Books.
3. Massey, D. S., Arango, J., Hugo, G., Kouaouci, A., Pellegrino, A., and Taylor, J. E. (1998). Worlds in motion: Coming to know the international migration at the end of the millennium. Clarendon Press.
4. Sassen, S. (2014). Expulsions: Viciousness and sophistication in the international economy. Harvard University Press.
5. Goldin, I. Cameron, G., and Balarajan, M. (2011). Outstanding individuals: How immigration created our world and how it will make us. Princeton University Press.
6. Brettell, C. B., and Hollifield, J. F. (Eds.). (2020). Migration theory: Discipline talk (4th ed.). Routledge.
7. Betts, A., & Collier, P. (2017). Refuge: Changing a failed refugee system. Allen Lane.
8. Davis, M. (2006). Planet of slums. Verso.
9. Standing, G. (2016). The precariat: The new dangerous stratum. Bloomsbury Academic.
10. Harvey, D. (2012). Rebel cities: The right to the city to the urban revolution. Verso.
11. Zelinsky, W. (1971). Hypothesis of the mobility transition. Reprinted in The geography of mobility (Reprinted 2023). Routledge.
12. Kundu, A. (Ed.). (2019). Urbanisation and urban development in India. Academic Foundation.
13. Mitra, A. (2020). Migration, Remittances and Indian development. Routledge.
14. Bhagat, R. B. (2022). Indian population and development. Sage Publications India.
15. Deshingkar, P., and Farrington, J. (Eds.). (2021). Circular migration and rural development in India. Oxford University Press India.